(1)

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

शिक्षा कि चुनौतियाँ,
नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य
वर्तमान के संदर्भ में कुछ

(1) शिक्षा के लक्ष्य

शिक्षा का लक्ष्य सन्दर्भ में शिक्षाविदों का कहना है कि

(1) प्रत्येक विद्यार्थी को व्यवहार में मानव संचेतना संपन्न सामाजिकता सिखाना है। इसके लिये तथा व्यवस्था में कुशलता अर्थात् निपुणता कुशलता और पाण्डित्य मानव संचेतना को शिक्षा को प्रकाशित करना चाहिये। इसकी आकलनात्मक सभी वर्तमान शिक्षा में समाहित करना चाहिये। व्यवहार को ठीक करना चाहिये।

(2) वैज्ञानिकता को विकसित करने के लिये परिष्कार संचेतन अर्थात् अस्तित्व मनुष्य का मानवीय दृष्टि व चरित्र को और सत्य ही मूल्यों का व्यवस्था पहचानने की आवश्यकता है।

आर्थिक संपन्नता के लिये :-

+ स्थानीय प्राकृतिक स्रोतों पर आधारित उत्पादन ग्राम और कुटीर उद्योगों के द्वारा उत्पादन कुशलता को सर्व सुलभ करने से आवश्यक

+ विनिमय व्यवस्था को प्रावधानित करना आवश्यक है। इससे तकनीकी [illegible] करना चाहिये सीखने के लिये मानवीयता को पहचानने।

(3) समतामूलक सामाजिक मानवीयता को पहचानने की व्यवस्था चाहिये और उसका मूल्यांकन करने की व्यवस्था चाहिये।

(4) धर्मनिरपेक्ष और पवित्र संप्रेषणीयता को मानवीयता को पहचानने चारित्र्य रूप देने के लिये की आवश्यकता है।

(5) सामाजिक न्याय के परिप्रेक्ष्य में [illegible] व्यवस्था में विश्वास और निष्ठा [illegible] मानव मूल्य [illegible] मूल्य व मूल्यों का [illegible] अनिवार्य है। संभावना का व्यवस्था अनिवार्य है।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 - 83

(2)

(ब) श्रम तथा कठोर परिश्रम के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण
अमप्रलोभनवादी सभ्यता के स्थान पर
मूल्यों का परिचय व मूल्यांकनवादी तथा
श्रम नियोजन व ~~श्रम~~ विनिमयकारी व्यवस्था से संपन्न
होने की व्यवस्था हो।

स ~~(ग)~~ शिक्षा संस्कार की प्रभावान्वित संस्कृति सभ्यता
विधि व्यवस्था का ~~विलक्षण स्रोत~~ आधार प्रमाण है

3) व्यवहार व व्यवसायिक शिक्षा का सर्व सुलभ करना चाहिये,
~~[illegible]~~ प्रमाण प्रत्येक शिक्षार्थी को प्रकाशित होना ~~[illegible]~~ चाहिये
4) स्व व समाज में ~~[illegible]~~ विश्वास पूर्ण आचरण स्थापित हेतु शिक्षा का
[illegible] नैतिकवाद
5) ~~[illegible]~~ व संयोगवादी अर्थात् समाधानात्मक भौतिकवाद [illegible]
[illegible] अनुभवमूलक [illegible] समाधानात्मक [illegible] ~~मूल्यों~~ [illegible]
[illegible] विज्ञान पूर्वक [illegible] ~~[illegible]~~
[illegible] विधिवत् [illegible] ~~[illegible]~~ पूर्वक [illegible]
[illegible] [illegible] पूर्वक [illegible]
[illegible], मूल्यों का परिचय [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible]
~~[illegible]~~ विकास ~~[illegible]~~ को ~~सर्वसुलभ~~
पाठ्य पाठ्यक्रम में समावेश करना चाहिये

~~शिक्षा और समाज~~

(3)

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

२ - शिक्षा और समाज

१ - शिक्षा [illegible]

क - पंचायती इकाईयां शिक्षा के प्रति जागृत अर्थात शिक्षा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] स्पष्ट सचेतना होने [illegible] स्थिति में उस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मानवीय मूल्य चरित्र नैतिकता को चरितार्थ [illegible] विद्यार्थियों [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] शिक्षा को [illegible]

ख - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

१५ - [illegible]

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 - 83

३। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

VIII VI V

(४)

2) सह अस्तित्ववादी

3) शिक्षा का अभिभावक और शिक्षार्थियों का सम्मिलित रूप ही
समाज का स्वरूप है इनमें अमानवीयता ही
परस्पर प्रेरक बनता है।

३– अमानवीयता कारणों में

1 अ – प्रचलित शिक्षाविदों से, प्रशासन प्रबन्ध, शिक्षा [illegible]
मूल्यांकन के लिए प्रतिभा का पहचान उत्पादन का
उत्पादित कौशल के आधार पर, निर्धारण पद्धति [illegible]
यथास्थिति के अर्थ में, सर्वेक्षण यथास्थिति और रोजगार
यथास्थिति के अर्थ में, प्रमाणन
के अर्थ में, नियोजन प्रयोजन के अर्थ में, प्रमाणन
[illegible] अर्थ में, समाधान सम्पन्नता के अर्थ में
अर्थ में, समाधान, अध्ययन सम्पन्नता [illegible]
आवश्यकता के अर्थ में स्वीकार करता है [illegible]
[illegible] इसी क्रम में शिक्षा का संस्कृति सम्पन्नता [illegible]
उद्देश्य होता है इसलिए [illegible] इनको लिये
[illegible] पाठ्यक्रम [illegible]
[illegible] हुआ जाता है। [illegible] इसी क्रम में सर्व
[illegible] शिक्षा, मानवीय संस्कार [illegible]
[illegible] कि इससे [illegible]
[illegible] होता है।

ब – प्रस्तुत पद्धति – सम्पूर्ण व्यवस्था में मानव चेतना का
असंतुलन [illegible] व्यवस्था [illegible]
[illegible] घटित हो जाता है [illegible]
[illegible] सन्तुलन [illegible]
दिया है।

२ कारणों का

2 अ – [illegible] शिक्षा [illegible] शिक्षा
कार्य व्यवस्था [illegible] मानवता और इस
[illegible] संवैधानिक [illegible]

2 ब – ~~शिक्षा~~ [illegible] अनुसार [illegible]
कारण मानवीयता [illegible] व्यवस्था [illegible]
मानवीयता पूर्ण [illegible]
[illegible] होना आवश्यक है।

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

३ वित्तीय कारणों।

३-अ वित्तीय आवंटन शिक्षा की सार्थकता और सार्थक बोध का आधार पर आधारित होना चाहिये।

३ ब - शालाओं को आवश्यक स्रोत में विविधता होने के कारण उपयोगिता [illegible] को मूल्यांकन करते हुये शिक्षा की सर्व सुलभता व [illegible] स्वीकार करने की सामान्य मानसिकता को उपयोग में [illegible] की [illegible] चाहिये।

४ - व्यवस्थागत समस्यायें

४-अ भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था लोकतंत्र के प्रति अविश्वास को उपचार के स्थान पर विश्वास के आधार पर सौहार्द्र का प्रदान करना हमारे हाथ में है। [illegible] [illegible] [illegible] सके। [illegible] [illegible] मूल्य व मूल्यांकन प्रणाली से [illegible] [illegible] [illegible] सुलभता का सम्पूर्ण [illegible] आधार होगा।

४-ब - विद्यालयों को आवश्यकताओं की कमी [illegible] ~~एवं और [illegible]~~ [illegible] का अभाव,

४-स, स्थानीय स्रोतों से, उदारवादी समाज से भी [illegible] और से, विद्यार्थियों के कल्याण निधियों से, [illegible] [illegible] ~~[illegible]~~ शिक्षक और विद्यार्थियों का [illegible] से शासकीय समानतावादी [illegible]

(6) ४ - प्रारंभिक शिक्षा का लोकव्यापीकरण

1- शिक्षित वर्ग द्वारा अनुकरण, अनुसरण या शिक्षा का लोकव्यापीकरण का एक सहयोग प्रक्रिया है

2- ठीक है

3- आठवीं से सूत्रपात व्यवस्था शिक्षा का होना उचित होगा

4- क्रम से यह आकांक्षा पूरा होने की व्यवस्था है ~~[illegible]~~ उच्च शिक्षा के प्रति आकांक्षा का अभाव करनेवाली उपाय करना चाहिये (और) स्नातकोत्तर प्रदेश स्तर आदि के द्वारा

5 - प्रौढ़ शिक्षा

~~विरला [illegible]~~

1- प्रौढ़ शिक्षा को उपयोगितावाद से सम्पन्न करना चाहिये

2) मानवचेतना की पहचान कराना प्रक्रिया से

3) ~~[illegible]~~ सांस्कृतिक इकाईयां अपने योगदान दे सकती हैं। ~~[illegible]~~ निरंतर मूल्यांकन व्यवस्था आवश्यक है।

6 - उच्च शिक्षा

1- छात्रों का मूल्यांकन करने ~~[illegible]~~ का अधिकार केवल शिक्षकों को समाहित रहना चाहिये उसी क्रम में उच्च शिक्षा ~~[illegible]~~ में प्रवेश होगा।

2) ~~[illegible]~~ अनुचित होगा कि

3) किताबें भी सामान्य यह सम्भावित नहीं होगी अधिकतम अध्यापकों से पारंपरिक संयोजनों को सर्व सुलभ ज्ञान अथवा भारतीय पद्धति से लेकर वैदिक काल पाठ्यक्रमों व्यवस्था से निराकरण होगी।

4) जो सीखना चाहते हैं उनसे बच्चों शिक्षण देने की ~~[illegible]~~ पूर्णतः प्रौद्योगिकी ग्राम व्यवस्था ~~[illegible]~~ भूमिका होना चाहिये समस्या सुलझाने में पूर्ति प्रकारों का

5) अध्यापकों का मूल्यांकन करने पर पूर्ति प्रकारों का उचित होगा।

(7)

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

7 – शिक्षा का व्यवसायीकरण

1 – स्वरोजगारीयता को उत्पादित कर प्रोत्साहित करना चाहिये

2 – शिक्षा व्यवहारिक व व्यवसायिक हो ताकि आवश्यकता के लिये व्यवसाय का निर्णय न हो।

3) – प्रशिक्षण कार्य को उत्तीर्ण होना चाहिये
~~उ~~ उद्योग/उत्पादन को रोजगारों को

4 – सरकारी संस्थायें तथा निजी व्यवसाय व्यवस्था से आश्वस्त करना चाहिये,

8 – तकनीकी शिक्षा

1) तकनीकी शिक्षा में स्वरोजगारीयता की सम्भावना को निर्मित करना चाहिये, प्रतिभा और योग्यता को मूल्यांकन करना चाहिये

2. स्वावलम्बन में आत्मविश्वास और निर्णय में सहायता

3) ~~[illegible]~~ आवश्यकता का मूल्यांकन होना

4) स्कूल/कालेज/विद्यालयों को पाठ्यक्रमों की मान्यता से और योग्य तकनीकी विधा व प्रश्न भी पैसा कमाने की कारीगर उनसे निपुणता से शिक्षित होने की व्यवस्था चाहिये उसका मूल्यांकन होना चाहिये

5) उपाधि प्राप्तिओं की नीतियों में सामंजस्यता और राष्ट्रीय आवश्यकताओं की नीति की आंशिक रूप अस्पष्टता है क्या है।

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP: 1982 – 83

(8)

९ प्रबन्ध शिक्षा

1) परस्पर सम्बन्धित संस्थाएं ~~कि~~ पड़ोसी ग्राम मंडल रहने वाली नीति विधि पद्धति को विकसित करना चाहिये।

2) व्यवहार संचेतना पूर्वक ही ~~व~~ ग्राम सभा व कार्यक्रमों निर्णय होने की व्यवस्था है।

१० परीक्षा पद्धति ~~व्यवसायिक शिक्षा~~

1) प्रत्येक विद्यार्थियों को व्यवहार व व्यवसाय क्षमता को ~~...~~ अध्यापकों और आचार्यों द्वारा सम्पन्न होनी चाहिये ~~उनमें~~

2) व्यवहार व्यवसाय शिक्षा का प्रमाणीकरण पूर्ण पाठ्यक्रम, फलतः पारंगतता, सम्पन्न होगी और सामग्रियों उपलब्धि समस्याओं के रूप में प्रावधानित करना चाहिये, अध्यापकों का मूल्यांकन को स्वीकारना चाहिये

3) जानकारी-ज्ञान में मानवीय व्यवहार संचेतना के साथ व्यवसाय ~~...~~ कुशलता को सर्व सुलभ करने से

4) मानवीयता का है

(७)

GOVT. POLYTECHNIC
DURG. (M.P.)

६५ - शिक्षा का मूल्य शिक्षा कार्यशिक्षा

1- कर्म (उत्पादन कार्य) कार्य कुशलता शिक्षा एवं प्रशिक्षण आमतौर स्वास्थ्य एवं आयु के अनुसार आवश्यकीय नीति से व्यवस्था करना चाहिये

2) समाधान सम्मत और शासन संविधान का सुविधा का प्रावधान होना चाहिये

3, मानव संचेतना का व्यवहार, उत्पादन में दक्षता को आचरण में लाना चाहिये

4) मानव संचेतना को अखण्ड समाज में पहचान करने, मानव मूल्यों का मूल्यांकन करने, ... और मानव संचेतना ... आवश्यकता है। उत्पादन कार्य में कुशल होने की आवश्यकता है।

5) राष्ट्र और समाज के संबंध ... आवश्यक ... सुविधा ... आवश्यकता ... सम्मानजनक ... आवश्यकता है।

6) अध्ययन का मूल्यों का व्यवस्था में वर्तमान होना अनिवार्य है कि;
शिक्षा स्वरूप शिक्षा को मानवीयता ही ... मानव संस्कृति सभ्यता ... चाहिये ...
शिक्षा मानव संचेतना को पहचानने और मूल्यों का ... मानव व्यवहार शिक्षा और व्यवहार ... व्यवस्था ... शिक्षा संस्थाओं ...

CURRICULUM DEVELOPMENT WORKSHOP; 1982-83

इसे पहचानना और व्यवहार में ... मानव परम्परा ...